

संदा किर्मी

वार्षिक पत्रिका-2013-14

अंक-01



राजकीय पॉलीटेक्निक रुद्रप्रयाग
(रतूड़ा)

संसारिकिनी



वार्षिक पत्रिका-2013-14

अंक-01



राजकीय पॉलीटेक्निक रुद्रप्रयाग(रतूड़ा)



प्रधानाचार्य एवं सम्पादक मण्डल

संदा किर्मी

वार्षिक पत्रिका-2013-14

अंक-01



राजकीय पॉलीटेक्निक रुद्रप्रयाग
(रतूड़ा)

संरक्षक एवं प्रधानाचार्य

श्री देवेन्द्र गिरी

प्रकाशक

श्री देवेन्द्र गिरी

सम्पादक

श्री अनिल कुमार

सम्पादक मण्डल

श्री ऋषि भूषण, कु० अंजना, श्री दिवाकर प्रसाद, श्री गिरीश चन्द्र

सम्पादकीय सहयोग

श्री ए० के० लखेड़ा, श्री चितरंजन शर्मा, श्रीमती रेखा रावत, श्री बलवीर सिंह

छात्र सहयोग

तेजेन्द्र सिंह, मयंक गैरोला

विजय बहुगुणा



मुख्यमंत्री
उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड सचिवालय,
देहरादून - 248001
फोन : 0135-2752144

संख्या-246 मु.म.का./वि.मि/2013
दिनांक 24-12-13


संदेश

मुझे यह जानकारी प्रसन्नता हुई है कि राजकीय पॉलीटेक्निक रुद्रप्रयाग द्वारा वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

शिक्षण संस्थानों द्वारा प्रकाशित पत्रिका विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होती है तथा छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु एक माध्यम भी है।

पत्रिका में प्रकाशित होने वाले लेख, छात्र/छात्राओं के लिए उपयोगी होंगे, ऐसी आशा है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं।


(विजय बहुगुणा)

श्री देवेन्द्र गिरि
प्रधानाचार्य
राजकीय पॉलीटेक्निक रुद्रप्रयाग
बद्रीनाथ राष्ट्रीय राजमार्ग-58
पो.आ. -रतूडा, रुद्रप्रयाग पिन-246171



उत्तराखण्ड प्राविधिक शिक्षा परिषद् रुड़की (हरिद्वार)

पता: मुनेहन रोड, काशीपुरी - 247 667
दूरभाष : 01332-266370, 266371 फ़ैक्स 266349, Website: www.ubtr.in E-mail: ubtr_marker@yahoo.com

हरि सिंह,
राधिय।

संख्या- 3336/उप्राशिप/अधि0/विविध-दो(2)/2013-14

दिनांक : फरवरी 21 2014

प्रिय महोदय,

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि संस्था अपनी वार्षिक पत्रिका के वर्ष 2013-14 के संस्करण का प्रकाशन करने जा रही है, जिसके लिए संस्थान के छात्रगण, सम्पादक मण्डल एवं आप बधाई के पात्र हैं।

शैक्षिक, तकनीक एवं विज्ञान के क्षेत्र में समृद्धि के माध्यम से ही समाज एवं देश को विकास के रास्ते पर आगे ले जाया जा सकता है, परन्तु हमें अपनी सांस्कृतिक धरोहरों को भी संजोकर रखना नहीं भूलना चाहिए। नवोदित राज्य उत्तराखण्ड में युवाओं में तकनीकी शिक्षा के प्रति रुझान, प्रतिवर्ष तकनीकी संस्थानों की बढ़ती संख्या और उनमें प्रतिवर्ष बढ़ती छात्र संख्या को देखकर स्वाभाविक ही आनन्द की अनुभूति होती है। आज युवाओं की पीढ़ी आत्मविश्वास से भरी हुयी है और तकनीकी ज्ञान से परिपूर्ण है। आपके कुशल मार्गदर्शन में संस्था के छात्र-छात्राओं का औद्योगिक त्रिणाकलाओं में शारीरिकी के साथ-साथ बेहतर चरित्र-निर्माण होगा, ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है।

इस पुनीत अवसर पर आप सभी को मेरी एवं परिषद् परिवार की ओर से पुनः हार्दिक शुभकामनाएं हैं।

भवनिष्ठ,

(हरि सिंह)

प्रधानाचार्य
राजकीय पालीटेक्निक,
रतूडा, जनपद-रुद्रप्रयाग।

देश राज
संयुक्त निदेशक

निदेशालय प्राविधिक शिक्षा उत्तराखण्ड
श्रीनगर, (पौड़ी गढ़वाल)

दूरभाष :- 01346-250169 / 251937(कार्यालय)
: 01346-250168(फैक्स)

अर्द्धशा0 पत्रांक : 2907/नि0प्रा0शि0/प्रशा0 पांथ-12/2013-14

श्रीनगर : दिनांक 24 दिसम्बर 2013

:: संदेश ::

प्रिय श्री गिरी,

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि राजकीय पालीटेक्निक रुद्रप्रयाग अपनी वार्षिक पत्रिका **2013-14** का प्रकाशन करने जा रही है।

मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका में ऐतिहासिक, धार्मिक व तकनीकी संबंधी शैक्षिक पहलुओं से जुड़े विषयों को स्थान दिया जायेगा जिसका लाभ विद्यार्थियों के साथ-साथ यहाँ के जनमानस को भी मिल सके। शिक्षा का समाज, प्रदेश एवं राष्ट्र के विकास में अति महत्वपूर्ण योगदान है। आशा है कि यह पत्रिका छात्र-छात्राओं के बौद्धिक विकास में सहायक होने के साथ-साथ उनमें लेखन के प्रति अभिरुचि जागृत करने में सक्षम होगी।

मैं इस पत्रिका के प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ।

(देश राज)

श्री देवेन्द्र गिरि
प्रधानाचार्य
राजकीय पालीटेक्निक
रुद्रप्रयाग ।



संदेश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि राजकीय पॉलीटेक्निक रुद्रप्रयाग अपनी वार्षिक पत्रिका मन्दाकिनी के प्रथम वार्षिक अंक 2013-14 का प्रकाशन कर रहा है। इस शुभ अवसर पर मैं समस्त छात्र-छात्राओं एवं सम्पादक मण्डल के सभी सदस्यों को बधाई देता हूँ।

सूचना क्रांति के इस युग में छात्र-छात्राओं में मौलिक रचनात्मकता का होना अति आवश्यक है। यह पत्रिका छात्र-छात्राओं की सृजनशीलता का सशक्त माध्यम है। यह सृजनशीलता छात्र-छात्राओं के जीवन को सही दिशा देने में सहायता करेगी। यह मेरा विश्वास है, कि पत्रिका का यह अंक सभी छात्र-छात्राओं एवं पाठकों के लिए उपयोगी साबित होगा।

अन्त में पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

सद्भावनाओं सहित !

देवेन्द्र गिरी

प्रधानाचार्य



सम्पादक की कलम से

शिक्षा जीवन का आधार है, शिक्षा के औपचारिक और अनौपचारिक उद्देश्य को महत्व देना वर्तमान युग की सर्वोच्च प्राथमिकता है। शिक्षा के इन्ही उद्देश्यों की महत्ता को देखते हुये राजकीय पॉलीटेक्निक रुद्रप्रयाग के छात्र-छात्राओं एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों द्वारा संस्थान की प्रथम वार्षिक पत्रिका **मन्दाकिनी** का प्रकाशन किया जा रहा है। संस्थान की वार्षिक पत्रिका के सम्पादन का कार्य, दूरदर्शिता एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी हमारे प्रधानाचार्य महोदय ने मुझे दिया है, जिसके लिये मैं प्रधानाचार्य महोदय का सदैव आभारी रहूंगा।

यह कार्य मेरे लिये चुनौतीपूर्ण था लेकिन सम्पूर्ण सम्पादक मण्डल एवं समस्त शिक्षणेत्तर अधिकारियों एवं कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं के बहुमूल्य सहयोग से यह कार्य सिद्ध हुआ।

आज शिक्षा का व्यापक प्रसार हो रहा है, दिन-प्रति-दिन शिक्षा मंहगी हो रही है एवं प्रतिस्पर्धा भी बढ़ रही है। प्रतिस्पर्धा के इस युग में छात्र-छात्राओं को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के लिये तैयार करना शिक्षा का अभिन्न अंग है, क्योंकि छात्र जीवन में ही व्यक्तित्व का निर्माण होता है।

पत्रिका के इस अंक में छात्र-छात्राओं ने अपनी सृजनशीलता, कल्पनाशक्ति एवं रचनात्मकता का परिचय दिया है, जो कि इस बात का द्योतक है, कि व्यावसायिक शिक्षा की पाठ्यक्रम की व्यस्तता भी छात्र-छात्राओं की लेखनी की गतिशीलता को नहीं रोक सकी। पत्रिका में इन युवा रचनाकारों ने सामाजिक, राजनैतिक, आध्यात्मिक एवं समसामयिक मुद्दों जैसे- भ्रष्टाचार, कन्या भ्रूण-हत्या, दहेज-प्रथा, उत्तराखण्ड आपदा आदि विषयों पर अपनी जागरूकता एवं गहन चिन्तनशीलता का परिचय दिया है। इन विभिन्न विषयों पर दिये गये लेख इस बात को प्रदर्शित करते हैं कि छात्र-छात्राएँ इन विषयों के प्रति तुलनात्मक समझ रखते हैं।

छात्र-छात्राओं की यह चिन्तनशीलता मुझे सोचने के लिये विवश कर देती है कि शिक्षक के सकारात्मक अभिप्रेरण का स्पर्श मात्र ही इनकी प्रतिभा को पंख दे सकती है। लेखों की

गुणवत्ता भी एक अहम विषय है जिसके लिये सभी को ओर अधिक प्रयत्नशील होने की आवश्यकता है, तभी जा के शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य को प्राप्त किया जा सकता है।

पत्रिका सम्पादन में प्रधानाचार्य महोदय का निर्देशन एवं आशीर्वाद समय-समय पर प्राप्त होता रहा जिसके लिये मैं उनका हार्दिक आभारी हूँ। श्री ऐ० के० लखेड़ा, व्याख्याता कम्प्यूटर के बहुमूल्य सुझावों एवं कम्प्यूटरगत सहयोग के लिये मैं उनका हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। पत्रिका के विभिन्न पहलुओं पर सुझावों के लिए श्री वितरजन शर्मा तथा श्री गिरीश चन्द्र जी का हार्दिक आभार एवं कम्प्यूटरगत साज-सज्जा के लिये श्री ऋषि भूषण जी का आभार प्रकट करना चाहता हूँ। टंकणगत सहयोग के लिये श्रीमती रेखा रावत जी एवं श्री बलबीर राणा जी का हार्दिक धन्यवाद ।

अन्त में लेकिन कम नहीं, सम्पादक मण्डल के सभी सदस्यों एवं समस्त शिक्षणेत्तर कर्मचारियों एवं सभी छात्र-छात्राओं, जो इस कार्य में प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से संलग्न थे, का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ। वर्तनी शुद्धीकरण के भरसक प्रयासों के उपरान्त भी यदि कोई टंकणगत अशुद्धियाँ रह गयी हों तो इसके लिए मैं अपनी तथा सम्पूर्ण सम्पादक मण्डल की ओर से क्षमा प्रार्थी हूँ।

अनिल कुमार

(सम्पादक)

अनुक्रमणिका

हिन्दी अनुभाग

- राजकीय पॉलीटेक्निक रूद्रप्रयाग का जीवन परिचय
- इन्वर्जीनियरिंग के जनक
- सर्वोपरि व्यापार
- "जीने दो"
- "दो टूक"
- "जिन्दगी"
- मुर्गा
- शिक्षक और माली
- "केदारनाथ की तबाही"
- बेटी
- जिन्दगी
- वैज्ञानिक उपकरण
- मेरी तमन्ना
- माँ
- यदा यदा हि धर्मस्य
- योग का वैज्ञानिक पहलू
- ऐसी जिंदगी क्यों ?
- आँसू
- कभी स्वयं से भी करें सकारात्मक बातें
- "गरीबी की रेखा"
- अगर आप सोचते हैं
- कुछ सूक्ति वाक्य
- जीवन को प्रभावशाली कैसे बनायें ?
- चुटकुले
- असफलताओं का महत्त्व
- "मेरी अभिलाषा

सर्व श्री चितरंजन शर्मा

प्रकाश चन्द्र भट्ट

करिश्मा जुयाल

धर्मेन्द्र सिंह पंवार

धर्मेन्द्र सिंह पंवार

ऋषि भूषण

ऋषि भूषण

अनिल कुमार

आषीश गैरोला

प्रज्ञा नौडीयाल

अमित कुमार

करिश्मा जुयाल

संदीप कुमार

राकेश सिंह राणा

कैलाश मलासी

चितरंजन शर्मा

रेखा नेगी

रेखा नेगी

अंजना नगवाल

करिश्मा जुयाल

सतेन्द्र सिंह नेगी

चितरंजन शर्मा

चितरंजन शर्मा

विनोद सिंह रौथाण

नवनीत कुमार

अभिलाषा

- गुरु
- अजीब है ना
- ऐ खुदा
- क्या आपने माँ को धन्यवाद दिया ?
- माँ
- पहाड़ी जड़ी बुटियाँ

नवनीत कुमार
मो0 नायाब
मो0 नायाब
रेखा रावत
आरती गसाई
रेखा रावत

ENGLISH SECTION

- Parents I love you
- Girls are Gods gift
- Look at the stars
- Napoleon Hill
- A.P.J.Abdul Kalam
- A Great Quote
- Value of Education
- Big Data

Rashmi Badoni
Anil Kumar
Diwakar Prasad
Ankur Kandari
Ankur Kandari
Ankit Negi
Atul Kumar
Anajna Nagwal

छात्र-छात्राओं को सम्बोधित करते हुए प्रधानाचार्य



छात्र को पुरस्कृत करते हुए मुख्य अतिथि महोदय



प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि

राजकीय पॉलीटेक्निक रुद्रप्रयाग का जीवन परिचय

रुद्रप्रयाग जिले में तकनीकी शिक्षा तथा स्थानीय विद्यार्थियों के बेहतर भविष्य के लिये दिसम्बर 2005 में राजकीय पॉलीटेक्निक संस्थान रुद्रप्रयाग को मंजूरी मिली तथा उसका शुभारम्भ रुद्रप्रयाग में व्यवस्था होने तक इसे राजकीय पॉलीटेक्निक गौचर, जिला चमोली में शुरू किया गया तथा इसे AICTE से तीन ट्रेड, सिविल, इलेक्ट्रीकल, कम्प्यूटर साइन्स की मान्यता मिली। रा०पा० गौचर में सन् 2006 से कम्प्यूटर साइन्स ट्रेड शुरू हो गया तथा यह तीन वर्षों तक यहीं चला, तथा इस समय स्टाफ के रूप में संस्था को प्रधानाचार्य श्री डी०सी० गुप्ता, व्याख्याता श्री जितेन्द्र प्रसाद (कम्प्यूटर साइन्स), वरिष्ठ सहायक श्री गिरीश चंद, कला अनुदेशक श्री आर०पी० शर्मा, कनिष्ठ लिपिक श्री बलबीर सिंह राणा तथा लैब अनुचर के रूप में श्री राम सिंह राणा, श्री किसन दत्त, श्री गंगा दत्त व श्री भूपनसिंह मिले। तथा रा०पा० गौचर के स्टाफ की सहायता से इसे सुचारु रूप से चलाया गया।

तथा इसके बाद प्रधानाचार्य श्री डी०पी० गुप्ता जी के प्रयासों से इस संस्था को सन् 2009 में जिला रुद्रप्रयाग के रतूड़ा में लाया गया तथा यहां पर किराया के भवन पर शुरू किया गया। तथा यहां स्टाफ के रूप में कुछ अतिरिक्त स्टाफ मिला। जिसमें अंग्रेजी व्याख्याता श्री डॉ० राजेश अमोली तथा गणित व्याख्याता श्री एस०के० ध्यानी तथा अनुदेशक के रूप में श्री विजेन्द्र ममगाई श्री योगेश रैवानी, श्री सी० शर्मा मिले तथा संस्था अब रा०पा० रुद्रप्रयाग रतूड़ा में प्रारम्भ हो गया।

प्रधानाचार्य श्री डी०सी० गुप्ता जी के देखरेख में इसके कई पायदानों को पार किया। इसमें प्रमुख यहां पर पढ़ाई का माहौल काफी अच्छा होना, ऐल्यूमिनी ससोसियेशन का गठन, स्टूडेंट चेप्टर का गठन, NSS का प्रारम्भ। कम्प्यूटर लैब का उच्चीकरण, तथा रतूड़ा में G.I.C रुद्रप्रयाग के सामने जमीन का आवंटन होना तथा कार्य का प्रारम्भ होना, स्टाफ विचार विमर्श से कार्यों को करना। तथा प्रधानाचार्य को इनके सौम्य व्यवहार से जाना जाता रहेगा तथा प्रधानाचार्य को कार्य सन् काल सन् 2012 तक रहा। तथा साथ ही इस समय स्टॉफ में व्याख्याता कम्प्यूटर साइन्स श्री अनिल कुमार जी भी शामिल हुये। तथा इसके बाद संस्था को द्वितीय प्रधानाचार्य के रूप में श्री देवेन्द्र गिरी से मिले तथा इसके कार्यकाल में अब तक संस्था मे निम्न अमूलचुल परिवर्तन हुये। अनुशासित प्रशासन तेजी से निर्णय लेने

की क्षमता समय के पाबन्द छात्र-छात्राओं को अनुशासित करना साथ इनके कार्यकाल में नवनिर्मित निर्माणधीन भवन का कार्य तेजी से हो रही है। इसके लिये प्रधानाचार्य द्वारा निर्माण स्थल का समय-समय पर निरीक्षण करना तथा साथ ही कार्य मे कमी होने पर उनके द्वारा व्यक्तिगत रूप से निर्माण कम्पनी को सूचित करना शामिल है। तथा अब तक निर्माणाधीन स्थल पर वर्कशॉप का निर्माण पूरा हो चुका है। हास्टल लगभग अन्तिम चरण में है। मुख्य भवन लगभग तिहाई कार्य पूर्ण हो चुका है। तथा वर्कराज को अन्य ध्येय में संस्था को जनवरी से मूल भवन रतूड़ा से संचालित करना तथा अन्य दो मिले ट्रेडों को भी संचालित करना शामिल है।

व संस्था को प्रथम वार्षिक पत्रिका प्रकाशन तथा संस्था के द्वितीय खेलकूद का आयोजन शामिल हैं।

चितरंजन शर्मा

कर्मशाला अनु०

इन्जीनियरिंग के जनक

15 सितम्बर को राष्ट्रीय इन्जीनियरिंग दिवस मनाया जाता है। यह दिवस मुख्यतः एम. वी. सर की याद में मनाया जाता है। अतः एम.वी. सर को जानना अति आवश्यक है, मैं उनके बारे में संक्षिप्त सारगर्भित जानकारी आपको बताना चाहता हूँ।

सर मोक्षागमडम विश्वेश्वरैया का जन्म 15 सितम्बर सन् 1860 को गुडेना छली चिकबलपुर में हुआ था। उनके पिता संस्कृत के विद्वान थे मोक्षागुडम विश्वेश्वरैया को एम.वी. सर के नाम से भी जाना जाता है। एम.वी. सर ने 15 वर्ष की आयु में अपने पिता को खो दिया था उन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा चिकबलपुर तथा दसवी की परीक्षा बैंगलोर में पूर्ण की मद्रास विश्वविद्यालय से बी.ए की शिक्षा इन्जीनियरिंग कालेज आफ साइन्स पुणे से की एम.वी. सा ने इन्जीनियरिंग के क्षेत्र में अनवरत कार्य किये अतः उनका जन्म दिन इन्जीनियरिंग दिवस के रूप में मानाया जाता है उनके द्वारा किये कर््यों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है।

- उन्होंने हैदराबाद में बाढ़ रोकने के लिए बाढ़ नियंत्रण डिजाइन बनाया ।
- कृष्णा राजा सागर बाँध का निर्माण किया
- वे वाटर सप्लाई तथा ड्राइनेज सिस्टम के अध्ययन हेतु दक्षिण अफ्रीका गये
- उन्होंने विशाखापट्टनम समुद्री पोर्ट को बचाने के लिए प्रोटैक्टिव सिस्टम बनाया ।
- उन्होंने स्वचालित बाढ़ नियंत्रक द्वारा बनाया जिसे ग्वालियर के टाइग्र बाँध तथा कृष्ण राजा सागर बाँध में लगाया है।
- उन्होंने एसिया का पहला इलेक्ट्रीकल जनरेशन प्लांट शिव समुद्रम नामक स्थान पर लगाया,

पुरास्कार —

इन्जीनियरिंग शिक्षा को लोगों तक पहुंचाने तथा इस शिक्षा पर पचास वर्षों तक कार्य करने हेतू 1955 में भारत रत्न से सम्मानित किया

- विश्वविद्यालयों ने उन्हें डाक्टोरल डिग्री से सम्मानित किया
- उन्हें डी० एस० डी० लिट एल०एल०डी०डी एससी से भी सम्मानित किया गया।
- 1923 को उन्हें प्रेसीडेन्ट, आफ इण्डियन साइन्स कांग्रेस से सम्मानित किया गया,
- इन्हें जार्ज पंचम ने कमान्डर आफ ब्रिटिस इण्डिया से शोभित किया गया।

एम० वी० सर 1908 में सेनानिवृत्त हुये उन्होंने दक्षिण भारत में अपने संस्थान खोले जिनमें कुछ मुख्य हैं।

- विश्वेश्वरैया तकनीकी विश्वविद्यालय
- कर्नाटक इन्जीनियरिंग कालेज
- विश्वेश्वरैया आइन्स व स्टील लिमिटेड
- विश्वेश्वरैया इन्सीट्यूट आफ टेक्नोलाजी

इन्जीनियरिंग के क्षेत्र में अविस्मरणीय योगदान देने वाले इस इन्जीनियरिंग का सन् 1962 में निधन हो गया ,परन्तु आज भी हम सभी उनके योगदान को इन्जीनियरिंग दिवस के रूप में याद करते हैं।

प्राकाश चन्द्र भट्ट

अतिथि व्याख्याता रसायन विज्ञान

सर्वोपरि व्यापार

आज हर एक काम में व्यापार दिखता है
जहां देखो वहां फैला , भ्रष्टाचार दिखाता है।
सारे नेता कह रहे हैं हो रही है अब मंहगाई कम
पर वहां मंहगाई से पटा हर बाजार दिखता है।

राजनीति गंदा धंधा सा बन गई है,
लालच हर एक का सब से ऊपर दिखता है।
घोटालों से करोड़ों कमाए लोगों की नजर में,
रुपया डॉलर के मुकाबले कमजोर दिखता है।
प्रकृति के कहर से जनता पर पहाड टूटा है।
इस कारण नेता ,अफसर का चेहरा परेशान दिखता है।
वे तो बेखबर हैं सिर्फ घडियाली आँसू बहाते हैं,
लेकिन यहां आपदा से जूझता हर इंसान दिखता है।
अपनों से बिछड़ने का दुःख ये राक्षस क्या जाने ,
जिन्हें लाशों पर भी अपने जीने का सामान दिखता है।
हर तहफ फैले इस लूटपात, अपराध में,
अपनी माँ बहन बेटी का चरित्र भरें बाजार बिकता है।
देश की फिक क्यों करेगा अब कोई,
सब को अपना-अपना कारेबार दिखता है,
बढती मंहगाई बढाना सरकार को एक हथियार दिखता है।
खाने को नहीं है दाना, पीने का नहीं पानी
गरीब की धसी आखों में सिर्फ भरा पानी दिखता है।

करिश्मा जुयाल
C.S.E तृतीय वर्ष

जीने दो

वंश—वंश करते मानस तुम

वंश बेल को काट रहे हो।

एक फल की चाहत में तुम

पूरा बाग उखाड़ रहे हो।

फूल रहे न धरती पर तो

फैल तुम कैसे पाओगे।

अंश काटकर अपना तुम

कैसे वंश बढ़ाओगे?

उम्र की ढलती शाम में जब

बेटा खड़ा न होगा साथ

याद करोगे अंश को अपने

खुद मारा जिसको अपने हाथ।

न कुचलो नन्हीं कलियों को

उनको भी जग में आने दो

बनकर फल खिलेंगे एक दिन

जीवन उनको पाने दो॥

धर्मेन्द्र सिंह पंवार

C.S.E तृतीय वर्ष

"दो टूक"

दोस्ती के दो टूक

मुसीबत में काम जो आये

सच्चा दोस्त वही कहलाये ।

सदा दोस्त की खुशियों के नये पैमाने लाये ।

दुःख भरे क्षणों में भी हंसना सिखलाये ।।

देख तका जेब में जी उसका ललचाया

रख कहो में हाथ दोस्त को फुसलाया ।

जेब मे न थी फूटी कोड़ी

कह दिया मैने उसका सारी ।

न मिला उसे जेब से धन

हाय रे ! मेरी जिन्दगी से दूर भागा उसका मत ।।

दोस्त से आया जब में तंग

जागी मुझमें एक नयी उमंग ।

मिली मुझे एक नयी दोस्त

आ गया था मुझमें जोश

उसने मुझे मुस्कुराना सिखाया ।

पलट गयी थी सारी काया

उसने मुझे दिल से समझाया

लक्ष्या अपना श्रेष्ठ बताया ।

धर्मेन्द्र सिंह पंवार

C.S.E तृतीय वर्ष

जिन्दगी

हर इन्सान को क्या से क्या बना देती है जिन्दगी,
हँसते हँसते कभी रुला देती है जिन्दगी।
कब खुद को खुद से मिला से मिला देती है जिन्दगी,
जीते जी कब मौत से मिला देती है जिन्दगी।
शर्म हया कें हर परदे को गिरा देती है जिन्दगी,
जमी से उठा कर आसमा तक ला देती है जिन्दगी।
कभी अपनी ही नजरों से गिरा देती है जिन्दगी
हर सच को झूठ व हर झूठ को सच में बदल देती हैं जिन्दगी।
हर याद को हमराज बना देती है जिन्दगी
कब किसकों हमराह बना देती है जिन्दगी।
हर चोट को सहती है जिन्दगी, हर गम को भुला देती है जिन्दगी।
सच मायने में यारों एक सधर्ष है ये जिन्दगी,
यारो दुखों व संधर्षों से मत घबराओं।
क्योकि भगवान का अनमोल तोफा है जिन्दगी।

मुर्गा

मुर्गा कितना भी स्वस्थ हो सुन्दर हो वह अपनी मौत नहीं मरता।
सुन्दर मुर्गा प्यार नहीं स्वाद बढ़ाता हैं दडबें में पडा मंगों टोकरी में पड़ी तरकारी जैसा है।
जब चाहा छुरी चला दिया उसकी गर्दन पर छटपटा कर वह शांत हो जायेगा।
न जाने किस मजबूरी में सूरज कें स्वागत में देता है बाग मुर्गा।
जब मुर्गे कें बीच से उठा जाता है कोई मुर्गा उस समय सभी देखते है एक दूसरे को लाचारी से,
अंडे सेती हुई मुर्गी पता नहीं उस समय क्या सोचती है।
अंडों में उसका भविष्य नी किसी का स्वाद पल रहा।
भविष्य हीनता में पल रहा आम आदमी बड़ें लोगों कें लिये मुर्गे समान होते है।
माना मंजिल दूर है, राह मुश्किलों से भरा है।
एक तरफ दुनिया का मेला है, उस राह पर तू अकेला है।
मार्ग में छाया है अंधेरा, आशा रख होगा सवेरा।
मन में उत्साह है कुछ करने व कुछ कर दिखाने की चाह है।
चाहे कोई न तेरा साथ दे, अजुर्न बन निशाना साध दे।
अगर तुम आग लगन की जलाओगे, जीवन में निश्चित की सफलता पाओगे

ऋषि भूषण
कंप्यूटर साइंस

शिक्षक और माली

अभी तक तो जनाब आपने केंचुवे और किसान की मित्रता के बारे में सुना होगा, फूल और माली के सम्बन्ध के बारे में सुना होगा लेकिन आज आप एक शिक्षक की कलम से शिक्षक और माली के सम्बन्ध के बारे में सुनेंगे।

शिक्षक और माली का घनिष्ठ सम्बन्ध होता है, क्योंकि इन दोनों का कार्य एक जैसा ही होता है। शिक्षक एक माली होता है और विद्यालय उसका बगीचा, विद्यालय रूपी बगीचे में शिक्षक रूपी माली फूल रूपी विद्यार्थियों की देखभाल करता है, उन्हें विकसित करने का भरसक प्रयास करता है। यह शिक्षक रूपी माली फूल रूपी विद्यार्थी के भविष्य का निर्धारण करता है, कि उसे कहाँ जाना है, किस प्रकार चमकना है और अपनी महक से दूसरों को भी महकाना है। इस महक का निर्धारण भी माली के ही मार्गदर्शन में होता है कि किस प्रकार की सुगन्ध से समाज को सुगन्धित करना है। सुगन्ध तो जन्मजात होती है जो प्रत्येक पुष्प में स्वाभाविक ही विद्यमान होती है, लेकिन माली अपने बहुमूल्य जल संवर्द्धन से एवं अतिरिक्त खर पतवार कटाई (निवारण) से फूल की खुसबू को बढ़ाने का भरसक और अथक प्रयास करता है, उसे प्रयत्न करना भी चाहिये क्योंकि यही उसका कर्म है। यह शिक्षक रूपी माली अपना कर्म पूर्ण निष्ठा से करता है तदोपरान्त भी कुछ पुष्प मुरझा जाते हैं और अपनी सुगन्ध को पूर्ण रूप से विकसित नहीं कर पाते हैं, आखिर ऐसा क्यों?

शायद इसलिये कि ये अपनी जड़ों को मजबूत नहीं कर पाते हैं और माली द्वारा दिये गये जल तथा खाद को ग्रहण करने में असामर्थ्य एवं दौर्बल्यता का परिचय देते हैं या अन्य बाह्य काँटों(कुसंग) की गतिविधियों में संलिप्त हो जाते हैं और पूर्ण रूप से विकसित नहीं हो पाते हैं।

यह पुष्प भविष्य में प्रताड़नायें सहता है, समाज में उपहास का पात्र बनता है और उसे हर जगह तिरस्कृत किया जाता है। वह अत्यन्त कठोर परिश्रम करने के पश्चात भी इन व्यसन रूपी काँटों की सैय्या से खड़ा नहीं हो पाता और हमेशा अपने आपको कोसता रहता है।

परन्तु अब फिर से उसके जीवन में एक मोड़ आता है शिक्षक रूपी माली अपने नोकदार हथियार(प्रेरणा एवं मार्गदर्शन) से इन व्यसन रूपी काँटों की मिट्टी ठिकाने लगाकर दौर्बल्यता का परिचय देने वाले विद्यार्थी का जीवन उद्धार कर देता है। इस प्रकार से पुष्प की अभिलाषा पूर्ण हो जाती है। यह शिक्षक के ही कृत्य से ही संभव हो पाया।

वर्तमान परिदृश्य में शिक्षक रूपी माली को अधिक कठोर परिश्रम करने की आवश्यकता है व अपने प्रेरणारूपी नोकदार हथियार को भी अधिक धारदार करने की आवश्यकता है ताकि छात्र रूपी पुष्प के जीवन में आने वाले काँटों को दूर किया जा सके और उसके जीवन को सफल बनाया जा सके।

अनिल कुमार

अ0 व्याख्याता अंग्रेजी

“केदारनाथ की तबाही”

उत्तराखण्ड में स्थित यह पवित्र तीर्थ स्थल जो चार धर्मों में से एक है, यहाँ भगवान शिव की प्राचीन मूर्ती तथा मन्दिर की पूजा की जाती है। हर वर्ष छः महीने के लिये यहाँ के गेट खुलते हैं 2013 में भी खुले यात्रा भी जोर शोर पर चली लेकिन इस साल जो हुआ उसे शायद ही कोई भूला पायेगा, 16-17 जून का वो दिन कभी नहीं भूला पायेगा। लगातार हुई बारिश और प्रलय की शुरुआत अचानक कुछ ऐसा हुआ कि जिसने कई घर उखाड़ दिए, कई तीर्थ यात्री कई मजदूरों को परलोक की राह दिखा दी वो थी। भयंकर जल प्रलय से केदारनाथ में ग्लेशियर टूट जाने से भीषण तबाही मच गई। कुछ ही घण्टों में यह पावन तीर्थ नगरी मात्र एक शमशान में परिवर्तित हो गई। सारी मकानें टूट कर मलबे में दब गई, और वह पानी नदियों में मिलकर निचले हिस्सों में तबाही का मंजर फैलाते हुए पूरे उत्तराखण्ड में नदी के किनारों के बाजार, गाँव, शहर को तबाह करता हुआ आगे बढ़ता चला गया। इस पर हमारे समाज में कई प्रकार की चर्चा चली जिससे कहा गया कि धारी देवी को उसके स्थान से उठाने के कारण यह विनाश तान्डव हुआ।

कई लोगों का मानना है कि तीर्थ स्थलों पर कई प्रकार के ऐसे कार्य किए जाते हैं जो समाज में मुख्य बुराई के रूप में फैल चुकी है। शराब आदि उपयोग की जाती है, और तीर्थ स्थलों पर जो लॉज होटल आदि खुले हैं उनमें खना इतना मंहगा था कि आम आदमी का यात्रा करना एक प्रकार से नामुमकिन सा था, जो एक प्रकार से बुरी बात है चंद रूपयों के फायदे के लिये किसी को लूटना कहां तक तर्क संगत है। ऐसा नहीं होना चाहिये था, परन्तु क्या परिणाम मिला इसका आज वहां मात्र मलबा ही रह गया है। परन्तु यह भी गौर करने वाली बात है कि केदारनाथ मन्दिर पर आँच तक नहीं आई यह भी तो एक चमत्कार ही मान सकते हैं चाहे वह किसी भी प्रकार से बचा इस आपदा में कई देश विदेश से आये यात्री दब कर मर गये थे वे भगवान के पास चले गए, परन्तु जो लोग बच गए उनका मोत से बत्तर हाल किया गया। कई सारी न्यूज छपी जिसमें साधु के रूप में लुटेरे को बत्ताया गया, किस प्रकार साधुओं ने लोगों को लूट कर धन एकत्रित किया। जब साधु की ऐसे कर तो किस पर विश्वास करें। देश के कोने कोने से पैसा तो आया परन्तु पता नहीं कि वो सही लोगों को मिला या नहीं, फोजियों ने तथा विभिन्न दलों ने (बचाव दल) लोगों को बचाया उन्हें बचाने को सरकार ने सहायता भेजी पर वह सही हाथों गई ही नहीं कई लोगों ने रूपयों के लालच में उसको भी बेच दिया।

मुश्लिम को कुरान में इमान न मिला,
हिन्दू को गीता में भगवान न मिला।
उस इन्सान को आरमान में क्या भगवान मिलेगा,
जिसे इन्सान को इन्सान में इन्सान न मिला।

आशीश गैरोला
प्रथम सैमेस्टर

बेटी

वो फूल होती है हर आँगन को घर की हवा को सहकाती है।
वो कली होती है जो, एक नई सुबह में खिल जाती है।
जिसकी पायल की रून झुन, घर में रौनक बढ़ाती है।
साहस बलिदान का दूसरा नाम है वो,

हर कठिनाई को साहस से झेल जाती है,
दौलत और बड़ी खुशिया नहीं, घर की शान्ति चाहती है वो।
राखी बाँधकर वो अपनी रक्षा की नहीं,
भाई की लम्बी उम्र की कामना करती है।

पिता को बेटी की नहीं माँ की तरह संभालती है।
माँ की सहेली बनकर हर सुख दुख बाँटती है।
फिर जोड़ती है खुद को नए रिश्ते से, नये परिवार को जोड़ती है।
किरण बनकर अधंकार को तोड़ती है।
वो बेटी ही है जो घर को रोशन करती है।
फिर भी वो आज भी बोज़ ही कहलाती है।

प्रज्ञा नौडीयाल
प्रथम सेमेस्टर

जिन्दगी

जीने का नाम जिन्दगी है, तो मुझे जीने में इतनी मुसीबत क्यों आती है।
हर पल में खुशीं क्यों नहीं होती हर पल ख़ुबसूरत क्यों नहीं होता।
क्यों कोई आता है इस जिन्दगी में और क्यों मोड़ देता है जिन्दगी को वीराने में
क्यों कहते हैं कोई साथ देंगे जिन्दगी जीने में और क्यों छोड़ देते हैं मुसीबतों में
जिन्दगी एक रिश्ते में नहीं टिकती ये पता है फिर कोई क्यों इसे किसी में टिका देते हैं।
क्यों चाहते हैं हम किसी को जिन्दगी से ज़्यादा जब पता होता है वो नहीं कुछ और है
जिन्दगी।

अमित कुमार
C.S.E तृतीय वर्ष

वैज्ञानिक उपकरण

- ◆ किस वैज्ञानिक उपकरण का प्रयोग ऊँचाई मापने में करते हैं?
- ◆ अनिमोमीटर द्वारा क्या मापते हैं ?
- ◆ किस यंत्र के द्वारा हृदय गति अभिलेखित की जाती है ?
- ◆ किस यंत्र की सहायता से मानव नाड़ी ध्वनि को उत्पन्न करते हैं?
- ◆ घूर्णन किस यंत्र से ज्ञात करते हैं ?
- ◆ पायलट बैलून से क्या मापते हैं ?
- ◆ सूर्य प्रकाश अवधि किस यंत्र द्वारा मापते हैं ?
- ◆ चोंद, सूर्य नक्षत्रों का तापक्रम किस यंत्र से ज्ञात करते हैं ?
- ◆ शराब में एल्कोहल की मात्रा का पता किस यंत्र से करते हैं ?
- ◆ बादलों की गति व स्थिति का मापन किस यंत्र से करते हैं ?
- ◆ वर्षा को किस यंत्र के द्वारा मापते हैं ?
- ◆ केस्कोग्राफ पौधों में क्या माप करता है ?
- ◆ वायुयान की गति किस यंत्र द्वारा की जाती है ?
- ◆ भूकंप की तीव्रता किस यंत्र द्वारा रिकार्ड करते हैं ?
- ◆ वायु की दिशा किस यंत्र से मापते हैं?
- ◆ स्लिंग साइकोमीटर का प्रयोग किस लिए करते हैं। ?

- ☞ एल्मीमीटर
- ☞ वायुवेग
- ☞ कार्डियोग्राफ
- ☞ स्फिग्मोफोन
- ☞ 'टोपोमीटर
- ☞ ऊँचाई के साथ हवा की स्थिति
- ☞ सनशाइन रिकार्डर
- ☞ पाइरोमीटर
- ☞ आइनोमीटर
- ☞ सेलियोमीटर
- ☞ रेनगेज
- ☞ वृद्धि
- ☞ क्रोनोमीटर
- ☞ सीस्मोग्राफ
- ☞ बिड़ बेन
- ☞ वायुमंडलीय आर्द्रता के लिए

करिश्मा जुयाल

सी० एस० ई० तृतीय वर्ष

मेरी तमन्ना

मेने सपनों संजोए है, इन्हे बिखरने मत देना।
मेने अपने रास्ते पर चलना है, मुझे मोड़ मत देना।
मेने उम्मीदे बाँधी है, इन्हे तोड़ मत देना,
मेरी भी किस्मत है मुझे छोड़ मत देना।
मेरी जिन्दगी को जीना है, ज्यदा इन्हे मरने मत देना।
दर्द होते हुए भी हंसना चाहा है, मुझे रोने मत देना।
आँखों में आंसु है मुझे रोने मत देना।
मेरे दिल में कुछ समस्या है, मुझे सौने मत देना।
मेरे भी कर्तव्य है, मुझे भुलने मत देना
मेरी भी मंजिले है, मुझे भटकने मत देना।
मेने शिखरो की छुने की तमन्ना है मेरे कदमों को रोक मत देना।
रास्ता कठिनायों से भारा है ,इन्हे छोड़ मत देना,
परेशानी कुछ भी हो बढ़तें रहना,
अभी तो संदीप ने शुरुआत की है इन्हें कुचल मत देना।

संदीप कुमार

प्रथम सैमेस्टर

माँ

भगवान ने कहा ⇒ माँ मेरी तरफ से एक दुर्लभ तोहफा है।
समूह ने कहा ⇒ माँ एक सीप है, जो सन्तान के लाखों रहस्यों को सीने में छिपा लेती है।
बादल ने कहा⇒ माँ एक चमक है, जिसमें हर रंग उजागर होती है,
सन्तान ने कहा⇒ माँ ममता की अनमोल दास्तान है, जो हर दिल पर अंकित है।
औरंगजेब ने कहा⇒ माँ के बिना हर घर कब्रिस्तान है।
नादिरशाह ने कहा ⇒ मुझे माँ और फूल में कोई अन्तर नहीं दिखता,।
मेरी नजर में माँ⇒ माँ के बिना बच्चे डाली से टूटे फूल की तरह है जिसे हर कोई रौदना चाहता है।

राकेश सिंह राणा
आई0टी प्रथम वर्ष

" यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत, अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् "

जब जब इस संसार में धर्म की हानि तथा अधर्म का अभ्युदय होता है। तब तब इस संसार में मानवता का पाठ पढ़ाने तथा धर्म की पुनर्स्थापना के लिये महापुरुष के रूप में भगवान का प्रादुर्भाव होता है। ऐसा गीता में कहा गया है इसी परिवेक्ष्य में इस धरती पर अहिंसा तथा मानवता का पाठ पढ़ाने के लिये महात्मा गाँधी का जन्म हुआ। परिवार में सभी प्रकार की सुख सुविधा तथा भोग की वस्तुओं के होने के बाद भी उनको त्याग कर एक साधू सा जीवन जीने का ताउम्र प्रण करने वाले गाँधी का जन्म 02 अक्टूबर 1869 को गुजरात के पोरबन्दर नामक स्थान में कर्मचन्द गाँधी के घर में हुआ उनके माता का नाम पुतली बाई था जो एक ग्रहणी थी तथा पिता राजकोट के दीवान थे प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही पूरी होने के पश्चात् उच्च शिक्षा के लिए इंग्लैंड चले गये जहाँ से उन्होंने लॉ की शिक्षा प्राप्त की 1893 में गाँधी जी अफ्रिका गये जहाँ गौरेयों द्वारा काले लोगों के खिलाप नश्ल भेद किया जाता था इसी नश्ल भेद को मिटाने के लिये महात्मा गाँधी द्वारा अफ्रिका में प्रथम सत्याग्रह चलाया गया जिसका सफलता पूर्वक उन्होंने सम्पादन किया तथा भारत सहित सम्पूर्ण विश्व में उनके सत्याग्रह की चर्चा होने लगी। गाँधी जी सन् 1915 में अफ्रिका से भारत लौटे तथा उनके राजनीतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले द्वारा उनको सम्पूर्ण भारत भ्रमण का आदेश दिया गया जिसके प्रणाम स्वरूप उनको भारत में पहचान मिलने लगी। सन् 1917 में इनके द्वारा प्रथम सत्याग्रह आन्दोलन करने की चेतावनी मिली जो नील की खेती को किसानों के 1/3 भाग पर करने की मजबूरी थी, इसको चम्पारण आन्दोलन भी कहा जाता है। अंग्रेज जो पहले से ही गाँधी जी के सत्याग्रह से विदित थे तथा उन्होंने नील की खेती करने के लिए किसानों की बाध्यता को समाप्त कर दिया। सन् 1918 में खेडा में गाँधी जी के द्वारा प्रथम सत्याग्रह किया गया, जो प्लेग नामक बिमारी में वहाँ के लोगों को प्लेग भत्ता न दिए जाने के कारण था, तथा उन्होंने कहा प्लेग रोग से खतरनाक प्लेग कमिश्नर है। जो इनके वेतन को स्वयं खा रहा है।

गाँधी जी विकास के पथ पर आगे बढ़ने के लिए अहिंसा का मार्ग अपनाने हेतु अपने आन्दोलनों में इन्हें थे। वह भारत में सांप्रदायिकता एकता को बढ़ाने के लिये हिंदू व मुसलमानों को एकजुट करने की लगातार कोशिश करते रहते थे। 13 अप्रैल 1919 में जलियावाला बाग हत्याकांड में जनरल डायर को सजा दिलवाने हेतु तथा अंग्रेजों द्वारा हिंसा का मार्ग अपनाने के विरुद्ध इन्होंने सन् 1920 में असहयोग आंदोलन को शुरू किया, इसी बीच जनरल डायर को इंग्लैंड में भेजा गया, तथा उनको शेर की उपाधि दी गई इनाम स्वरूप उसे एक तलवार भेंट दी गई। जनरल डायर की 20 साल बाद 1939 में ऊधम सिंह नामक क्रांतिकारी ने जलियावाला बाग हत्याकांड का बदला डायर को गोली मारकर लिया असहयोग आंदोलन को संपूर्ण भारत में चलाया गया, यह एक अहिंसात्मक आंदोलन था जो दो साल तक चला तथा सन् 1922 को चौरा चोरी नामक स्थान पर आन्दोलन के हिंसात्मक होने के कारण वापिस लिया गया।

कैलाश मलासी
C.S.E प्रथम वर्ष



प्रधानाचार्य एवं समस्त शिक्षक एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारी

प्रथम पंक्ति में (दाँये से)– श्री दिवाकर प्रसाद (अ०व्याख्याता गणित), श्री ए.के.लखेडा (विभागाध्यक्ष सी. एस), श्री देवेन्द्र गिरी (प्रधानाचार्य), श्री सी.एस.शर्मा (कर्म.अनु०), श्री पी.सी.भट्ट (अ०व्याख्याता रसायन वि.)

द्वितीय पंक्ति में (दाँये से)– श्रीमती रेखा रावत (कनिष्ठ लिपिक) श्री बलवीर राणा (कनिष्ठ लिपिक), श्री किशन दत्त (लैब अनुचर), श्री गिरिष चन्द्र (प्रशासनिक अधिकारी), श्री राम सिंह राणा (लैब अनुचर), श्री अनिल कुमार (अ०व्याख्याता अग्रेजी), श्री ऋषि भूषण (अ०व्याख्याता कमप्यूटर), कु० अंजना नगवाल (कमप्यूटर प्रोग्रामर), श्री प्रवेन्द्र राणा (पी.आर.डी कर्मी)



प्रधानाचार्य,स्टाफ एवं सी0 एस0 ई0 तृतीय वर्ष के छात्र-छात्रायेँ



प्रधानाचार्य,स्टाफ एवं सी० एस० ई०द्वितीय वर्ष के छात्र-छात्रायें



प्रधानाचार्य,स्टाफ एवं सी0एस0ई0,आई0टी0 प्रथम वर्ष के छात्र-छात्रायें

योग का वैज्ञानिक पहलू

योग का अर्थ जुड़ना, योग का अन्तर्गत प्राण (वायु) का विशेष महत्व दिया जाता है। हमारा शरीर पांच तत्वों से मिलकर बना है जल, वायु, आकाश, अग्नि व पृथ्वी इसमें वायु (प्राण) तत्व सबसे प्रमुख है। इसके अभाव में जीवनों की कुछ मिनटों में ही मृत्यु हो सकती है तथा योग में वायु (प्राण) को जीव अपने श्वास के रूप में लेता है। प्राण ही स्वस्थ एवं ऊर्जावान बनाता है। प्राण की ऊर्जा से ही आंखों में दर्शन शक्ति, वाणी में सरसता, मुख पर आभा ओज एवं तेज, मस्तिष्क में ज्ञान, शक्ति एवं उदर में शक्ति कार्यरत रहती है।

जब श्वास शरीर में आता है तब मात्र वायु आक्सीजन ही नहीं आती है। अपितु एक दिव्य शक्ति भी अन्दर आती है।

योग दवाई की तरह कोई लक्षण के आधार पर चिकित्सा नहीं है। अपितु रोगों के मूल कारण को समाप्त कर हमें भीतर से पूर्ण स्वास्थ्य देता है। योग हमारे सिस्टम पर, मन पर, दोषों पर व संस्कारों पर एक साथ एक जैसा प्रभाव डालकर प्रत्येक व्यक्ति को शारीरिक एवं भावनात्मक रूप से स्वस्थ कर देता है।

दवाई खाने पर बाहर से रोगी व्यक्ति को प्रयोग कर शरीर के कैमिकल आदि का संतुलन करने की चेष्टा की जाती है। जबकि योग से शरीर के भीतर से ही संतुलन करने की चेष्टा की जाती है। मनुष्य श्वासन के लिये जिस वायु को ग्रहण करता है। उसे हम आक्सीजन कहते हैं तथा श्वास छोड़ते समय जिस वायु निकलता है। उसे कार्बन डाई आक्साइड कहते हैं। जबकि वास्तव में हम जो वायु लेते हैं उसमें अधिक भाग नाइट्रोजन का ही होता है। तथा शरीर की संरचना इस प्रकार होती है कि फेफड़ों से हमारी रक्त कणिकायें ऑक्सीजन को ही अवशोषित करती हैं। को छोड़ते हैं। वायु के घटक इस प्रकार हैं :-

नाइट्रोजन - 78.09; आक्सीजन - 20.95;

आर्गन - 0.93; कार्बन डाई ऑक्साइड - 0.03;

आक्सीजन शरीर कोशिकाओं के कार्यरत होने हेतु परम आवश्यक तत्व है। जिस क्रिया से ऑक्सीजन की मात्रा फेफड़ों में बंद जाती है। तथा कार्बन डाईऑक्साइड का निष्कासन फेफड़ों से अधिक होता है। उस क्रिया को योग कहा जाता है। योग द्वारा रक्त में ऑक्सीजन का स्तर बढ़ जाता है।

यदि शरीर को किसी प्रकार अधिक ऑक्सीजन मिलेगा तो शरीर के लिये एक दवाई की तरह कार्य करेगा।

प्रायः व्यक्ति गहरी सांस नहीं लेता, जिससे फेफड़ों का लगभग 1/4 भाग कार्य करता है। तथा शेष 3/4 भाग लगभग निष्क्रिय पड़ा रहता है। जिससे इस भाग में विजातीय द्रव्य जमने लगता है जिससे टीबी खांसी, ब्रोंकाइटिस आदि रोग मनुष्य को लग जाता है।

तथा यह रक्त संचार व रक्त संचार व रक्त शुद्धि पर भी प्रभाव डालता है। जिससे अन्य रोग उत्पन्न हो जाते हैं। लेकिन योग द्वारा दीर्घजीवन व निरोगी काया रहकर जिया जा सकता है।

योग करने से दीर्घ श्वसन का अभ्यास भी स्वतः होने लगता है।

अतः योग के अभ्यास शरीर स्वस्थ निरोगी व तेजस्वी बनता है तथा साथ मन बुद्धि पर भी सकारात्मक प्रभाव डालता है।

योग से निम्न प्रभाव पड़ते हैं :-

- (1) पाचन तंत्र पूर्ण स्वस्थ हो जाता है तथा समस्त उदररोग दूर होते हैं।
- (2) रोग प्रतिरोधक क्षमता अत्यधिक विकसित हो जाती है।
- (3) मुख पर आभा, ओज, तेज एवं शान्ति आयेगी।
- (4) बुढ़ापा देर से आयेगा तथा आयु बढ़ेगी।
- (5) मन स्थिर, शान्त और प्रसन्न होगा, तनाव से बचा जा सकता है।
- (6) सकारात्मक विचार समाप्त होते हैं तथा सकारात्मक विचार आते हैं।

अतः योग एक वैज्ञानिक पद्धति है। अतः इसे अपने जीवन में अपनाये यह हम अपने जीवन में बिल्कुल निःशुल्क प्राप्त होती है तथा इसका कोई साइड एफ़ैक्ट नहीं है।

चितरंजन शर्मा
डिप्लोमा इन योगा एण्ड
नेचुरल पैथी०

ऐसी जिदंगी क्यों ?

रात के अधरे में एक बार सोचती हूँ,
जिदंगी में सपनों का मीठा अहसास सोचती हूँ,
क्यों बिखरी पड़ी है जिदंगी इन तारों की तरह

एक ही आसमान के इन तारों को साथ लेकर सोचती हूँ।
क्या जिदंगी सिर्फ अपने लिये जीने का नाम है
खुद पर बीते हुये ,बुरे हालत सोचती हूँ,
क्यों जुदाई का समय बड़ा है इन काटों की तरह

फूलों सी जिदंगी मे छोटी सी मुकालात सोचती हूँ।
क्यों बदहाल है जिदंगी , किसी पागल की तरह ,
मिलेगी कब मुझे खुशियों की सौगत सोचती हूँ।

आँसू

बचाकर रख जमाने से इन्हें बर्बाद ना कर
उम्र भर साथ देते है तेरे जीवन के ये आँसू ,
बहुत दिन रोक कर देखा ,बहुत दिन पी लिया इनको
जी लिये लब जिगर जिससे वह इकरार है आँसू

खुशी अगर ज्यादा मिल जाये ,और दामन में ना आये,
निकल पड़ते है मोती खुशी झलकाने को आँसू।
रहस्य खोल देते है , जुबा हर बोल देते है,
बहुत खुशी हो या गम मे निकलकर इंसान के आंसू

पिघलते देखे है हमने पत्थर ,हजारो दिल जमाने में ,
हजारों वीर है पिघले, देखकर इंसानों के आंसू ,
मंजार पर मरी आकर चढाये फूल ना कोई।
यहाँ ये फूल है दोस्तों ,कब्र पर गिरते हे आंसू ।

रेखा नेगी
द्वितीय वर्ष

कभी स्वयं से भी करे सकारात्मक बातें

शब्दों में बहुत ताकत होती है कभी कभी वो शब्द ही हमारी पूरी सोच को बदलकर रख देते हैं पर अकसर मीठी और प्रेरित करने वाली बातें हम दूसरों से ही करते हैं खुद से बात करते समय शब्दों की ताकत को भूल जाते हैं।

पहले से ही फैसला करके रखे कि जो भी हो आप खुद को हारने नहीं देंगे आप गहरा श्वास ले, विश्राम करे ओर सोच कर देखे कि इस पूरी प्रक्रिया में क्या अच्छा छुपा हो सकता है यह सोचते ही आप खुद को मानसिक रूप से तैयार कर लेगे।

हर समय खुद सकारात्मक बातें करते हुए किसी नकारात्मक विचार को तटस्थता के साथ ग्रहण करे।

ऐसा कहे मे खुश हूँ, मैं स्वस्थ हूँ, मैं ऊर्जा से भरपूर हूँ आज का दिन अच्छा है मैं खुश किस्मत हूँ, ओर भगवान का शुक्रिया अदा करती हूँ, कि आपने मुझे यह दिन प्रदान किया, हम जिंदा हैं मैं खुद को पसन्द करती हूँ मुझे अपना काम अच्छा लगता हो हमारे बोल हमारी जिन्दगी का हिस्सा बन जाते हैं वे अवचेतन मन को गहराई से उतारकर आपके व्यक्तित्व का स्थायी हिस्सा बन जाते हैं।

चुनौतियों को अस्थायी वस्तुनिष्ठ और बाहरी कारक के रूप में स्वीकार करे। समस्या किसी एक अकेली घटना के रूप में ही देखे। अकसर अत्यधिक सोचते हुए हम दूसरी सभी स्थितियों से उन्हें जोड़ने लगते हैं ध्यान रखना चाहिए कि कुछ ऐसी बातें होती हैं जिन पर मनुष्य का नियन्त्रण नहीं होता है।

विपत्तियों और चुनौतियों का सामना करके ही सफलता हासिल की जा सकती हो अच्छे और मजबूत व्यक्तित्व के लिए इन चुनौतियों से ऊपर उतना जरूरी है इसलिए विपरीत स्थितियाँ आते ही खुद को असहाय महसूस न होने दें।

अपने सपनों और लक्ष्यों पर लगातार सोचते रहना चाहिए उनका मनन करना चाहिए यदि कभी चीजे विपरीत दिशा में जा रही हो तो खुद से कहे मैं अपने जीवन की इस स्थिति में सर्वश्रेष्ठ परिणाम हासिल करने में ही विश्वास रखती हूँ।

अंजना नगवाल
कम्प्यूटर प्रोग्रामर

"गरीबी की रेखा"

दीपावली की छुट्टियों में मैंने जब गरीबी की रेखा का नाम सुना तो ऐसे उछल कर अपनी जगह पर खडी हो गयी मानों वहाँ कीलें बिछि हों । कौन है यह नई रेखा ? जिसे मैंने आज तक नहीं देखा ,एकाएक मुझे उन सारी रेखाओं की याद आने लग गई जिन से मेरा पाला पड चुका था सबसे पहले मेरी रूमपार्टनर रेखा जो कॉलेज से लेके घर तक दीदी दी.. ..बड़बडाती रहती है। उसका जिक्र करना मतलब एक प्रश्नावली तैयार करना ।

बचपन में होती थी रेखागणित वाली रेखा जो दिखने में सीधी और सरल पर उतनी सीधी थी नहीं क्योंकि मैं हमेशा उसकी परिभाषा भूल जाती थी वह गरीबी की रेखा हो नहीं सकती हों उसे गरीब बच्चों को तंग करने वाली रेखा जरूर बोल सकते हैं। एक और रामायण काल वाली रेखा यानी लक्ष्मण रेखा थी जिसे लक्ष्मण ने सीता के लिये खींचा था । उस रेखा के नीचे भी गरीब नहीं हो सकता क्योंकि उस के नीचे तो आज तक बेचारी सीताएं रहती है। फिर एक बड़ी रेखा हे फिल्म लाइन वाली (हिरोइन) रेखा जिसकी सारी फिल्में मजे से देखी थी उसे गरीबी की रेखा तो नहीं कह सकते लेकिन अमीरों की रेखा जरूर कह सकते हैं, एक होती हे तकदीर की रेखा वह तो गरीबी की रेखा हो ही नहीं सकती क्योंकि उस के नीचे हाने से ही तो गरीबी होती है,उसे सीधे सीधे अमीरी की रेखा बोल सकते हैं।इन सब के अलावा कुछ और चिल्लर फुटकर रेखाएं दुनिया के नक्शे में यहां वहां बिखरी हुई हैं जिन्हें मैंने देखा नहीं पर बाई नेम जानती हूँ जैसे कर्क रेखा ,भूमध्य रेखा ,मकर रेखा , इन के नाम से ही लगता है कि इन रेखाओं का गरीबी /अमीरी से कुछ लेना देना नहीं है फिर यह कौन सी नई रेखा प्रकट हो गयी है, जिसका नाम सुनकर दिन गा उठता है रेखा! ओ रेखा ,मैंने अब तक तुम्हें नहीं देखा।

मन में कई सवालों में उलझी थी कि गरीबी की रेखा है तो पहले गरीबी से मिलूंगी तब रेखा का पता चल पायेगा ,इस का मतलब है पहले मुझे गरीबी को ढूढना पडेगा कहां मिलेंगे गरीब वैसे जब से मैंने होश संभाला है तभी से भारत की गरीबी के किस्से सुन सुन कर होश खो बैठती हूँ इसलिये यह तय किया कि गरीबी मुझे अपने देश में ही मिल जायेगी ।

मुझे दो साल पहले भी यादें ताजा हुई जब मैंने दोपहर में देखा था गंदे नाले के किनारें बनी टूटी फूटी झोपडियों की कतार को , जहां नेपाली बिहारी रोज लिहाड़ी (ध्याड़ी) पर काम करने वाले गरीब रहते थे और उन अधनंगे बच्चे सुअरों के साथ खेलते थे । रात के अंधेरों में मैंने वहां गरीबी को देखने के लिए ताकं झाक की तो वहाँ बोतलें और गिलास खनखना रहे थे जिनके बाई तरफ शराब की बोतलें और दाई तरफ मुरगें की टांग थी । साथ ही भटकती आत्मा की तरह राशन की दुकान पर पहुँची जहां एक व्यक्ति के पास गरीबी की रेखा के नीचे यापन करने वालों के लिये नीले रंग का राशन कार्ड था, जिस कार्ड के जरिये वह राशन ले रहा था, मैंने उस नीले राशनकार्ड वाले का पीछा किया वह जिस घर में गया वह किसी लिहाज से गरीब

का घर नहीं लग रहा था ,सीमेंटें से बना घर कीबी,फिज,गैस सोफा,पंखा सारी चीजें प्रयाप्त थी उस का अमीर होने का सबसे बड़ा संकेत था कि घर वास्तुशास्त्र के अनुसार बड़ा था। उस के हाथ में नीला राशन कार्ड ऐसे लग रहा था ,जैसे उसने किसी गरीबी को गरदन से पकड़कर लटका रखा हो फिर सोचा कि जहां जहां गरीबी होनी चाहिए वहां तो मिली नहीं क्या मैं उसे वहां ढूढने जाऊ जहां होती है ढेर सारी काली लक्ष्मी करोड़ों रुपयों का बकाया टैक्स मंहगी पार्टिया मर्सिडीज गाडियां शैपेने की बोटलें ,हीरों का नैकलेस, सितरों से जड़ी साडियों में लिपटी ओरतें। शाम को थक कर जब घर पहुंची तों पिताजी भी मेरी हालत पर ऐसे हँसे मानों कपिल शर्मा का कामेडी शों देखे रहें होंगे और कहा ऐसे ढूढने पर कुछ भी नहीं मिलेगा वही साथ बैठी छोटी बहिन ने कहा गरीबी की रेखा भारत में नहीं है वह तो अमेरिका में है भारत में तो ऑटो रिक्सा चलाने वालें भी यूनियन बाजी करनं है तो यहां कैसे गरीबी की रेखा हो सकती है।

अमेरिका के लोगों को रोटी कपड़ा मकान कुछ भी नसीब नहीं है,तभी तो वहां लोग डबलरोटी खाते है ,और सब्जी की भी कमी है, इसलिये थोड़ा प्याज टमाटर आलू डबलरोटी के अंदर रख कर खा देते है उसे सैंडविच बर्गर नाम देते है। कपड़ा तो किसी के पास भी नहीं है तभी तो छोटे छोटे कपडें फटी पुरानी जींस पहन कर रखते है वहां के लोगो के पास अपने घर तो होते नहीं है तभी तो चादर डण्डे लेकर जंकलों में जाकर तंबू गाडकार रहतें है, यही नहीं लोग जहां जातें है अपने साथ पानी की बोटलें ले जाते हैं। उसकी बातें सुनकर मुझे यकीन हो गया कि अमेरिका में ही मेझें गरीबी की रेखा से भेंट हो ही जायेगी अगर वहां भी नहीं मिली तो (पढे लिखे लोग मेरी इस बात का विश्वास करें या ना करें) तो यह रेखा संसार कें नक्शे में किसी भी साइड सें गुजरती हो लेकिन मेरा भारत इस रेखा के नीचे नहीं आता है।

करिश्मा जुयाल

सी० एस० ई० तृतीय वर्ष

“अगर आप सोचते हैं”

अगर आप सोचते हैं कि आप हार गये हैं,
तो आप हारे हैं।
अगर आप सोचते हैं कि आप में हौंसला नहीं है,
तो सचमुच नहीं है।
अगर आप जीतना चाहते हैं,
मगर सोचते हैं कि जीत नहीं सकते,
तो आप निश्चित हैं नहीं जी लेंगे।
अगर आप सोचते हैं कि आप हार जायेंगे,
तो आप हार चुके हैं।
क्योंकि सफलता की शुरुआत इंसान की इच्छा से होती है
ये सब कुछ आप की सोच पर निर्भर करता है।
अगर आप सोचते हैं कि आप पिछड़ गये हैं।
तो आप पिछड़ गये हैं।
तरक्की करने के लिए
आपको अपनी सोच ऊँची करनी होगी,
कोई सफलता प्राप्त करने से पहले,
आपको अपने प्रति विश्वास करना होगा।
जीवन की लड़ाइयाँ हमेशा
सिर्फ तेज और मजबूत लोग ही नहीं जीतते बल्कि
आज नहीं तो कल जीतता वही आदमी है
जिसे यकीन है कि वह जीतेगा।

सतेन्द्र सिंह नेगी

कुछ सूचित वाक्य

- हम कर्म करने में मनमानी कर सकते हैं, फल योगाने में नहीं कर सकते।
- अगर हम दूसरों के सुख में सुखी नहीं होते, तो दूसरों के दुःख में दुखी कैसे हो सकते हैं ?
- हम जैसा खुद के साथ चाहते हैं, वैसा दूसरों के साथ क्यों नहीं करते।
- मनुष्य अपने मन में जो विचार कर सकता है, उससे वह उपलब्ध भी कर सकता है।
- प्रत्येक व्यक्ति हर छोटे काम से जाना जाता है इसके लिये बड़े कार्यों का मूल्यांकन आवश्यक नहीं।
- मन आपका सबसे महान मित्र है तथा मन ही आपका सबसे बड़ा शत्रु है। अगर आप इसका प्रयोग सही तरीके से करते हैं। तब यह आपका परम मित्र है और यदि आप इसका गलत प्रयोग करते हैं तो यह आपका सबसे बड़ा शत्रु है।
- सुख दुःख कोई पदार्थ नहीं अनुभूतियों हैं, यदि अनुभव करो तो है न करो तो नहीं है।
- समय और जीवन एक ही वस्तु के दो नाम हैं, जितना समय कटता है उतना जीवन घटता है

सफल व्यक्ति

धुन का पक्का , कर्तव्य करने में जुटे रहने का अभ्यस्त मधुर भाषी, प्रेमपूर्ण व्यवहार करने वाला, मेलजोल बनाये रखने वाला, प्रशंसा करने वाला, पीठ पीछे किसी की निन्दा न करने वाला , नमस्कार में पहल करने वाला, नम्रतापूर्वक हंस कर स्वागत करने वाला, दान देने वाला कटु बचन सुन कर उत्तेजित न होने वाला व्यक्ति किसी को भी प्रभावित और मोहित कर सकता है।

सबसे उत्तम

- औषधियों में गिलोय उत्तम है। धन सम्पदाओं में विद्या उत्तम है।
- सब सुखों में स्वास्थ्य उत्तम है। सब अंगों में उत्तम अंग सिर है।
- सभी इन्द्रियों में उत्तम इन्द्रिय नेत्र है। सभी तृप्तियों में आहार की तृप्ति है।
- सभी स्त्रियों में माता का स्थान उत्तम है। संरक्षकों में पिता का और देवताओं में गुरु का स्थान उत्तम है। सभी गुणों में शील, गुण में कमल और फलों में नारियल उत्तम है।
- सब दानों में विद्या दान सब कार्यों में सेवा कार्य उत्तम है।
- सब कर्मों एवं कर्तव्यों का पालन करता हुआ निष्काम भाव रखने वाला सर्वोत्तम है।

श्री चितंजन शर्मा
कर्मशाला अनुदेशक

जीवन कों प्रभावशाली कैसे बनाये ? इसके लिये निम्न बिंदुओं को अपनाये ।

◆ **एकाग्रता-शारीरिक व्यायाम-** जिस प्रकार शरीर की शक्ति को बढ़ाता है एकाग्रता उसी प्रकार मन की शक्ति को बढ़ाती हैं ।

◆ **सकारात्मक विचार** -नकारात्मक विचार मनो मस्तिक को कमजोर कर देते हैं। सकारात्मक विचार से चारों ओर रसात्मक तंत्रों का तेज पुत बना लेता है ।

◆ **समय बरबाद मत करिए** - जीवन छोटा है और अत्यंत मूल्यावान भी समय बहुत तीव्र गति से होड़ रहा है ऐसे तकनीकों व उपाय कों खोजिये जिनसे आप न्यूनतम समय और शक्ति का व्यय करके अधिक से अधिक कार्य कर सकें ।

◆ **परेशानी में एकदम प्रतिक्रिया न करें** - अपने मन को कुछ विश्राम दे और तब शान्ति पूर्वक उस मुदे पर विचार करें ।

◆ **भूतकाल का चिंतन भविष्य की चिन्ता-**मनुष्य अधिकतर समय बीते हुये कल या आने वाले कल की चिन्ता पर व्यतित हो जाता है। जबकि आज पर नही जीतें ।

◆ **कमजोरियों को स्वीकारिए** - जब आपने एक बार अपनी कमजोरियों को जान लिया तों समझ लिजिये कि आपने उनको दूर करने का पहला कदम उठा लिया ।

◆ **बिना मांगे सलाह न दीजिये-** टीका टिप्पणी करने से बचिए जीवन में केवल अपनी उन्नति पर मन को एकाग्र करिए , दूसरे क्या कर रहे है। इसमे हस्तक्षेप करके और परेशान होकर अपने समय को नष्ट न करें ।

◆ **सदैव आशावादी रहिए** - आप किसी कार्य कों करने में चाहें कितनी बार असफल हो चुकें है। फिर भी अपनी सफलता कें बारे में सोचे ।

◆ **टालने की आदत से बचिए** - सफल व्यक्ति वे होते है जो अपनी कुर्सी से उठ कर तत्काल कार्य करतें है। किसी चीज को शुरू करने का सही समय बस यही है। कल नही ।

◆ **दूसरे से आशाएँ मत करिए** - किसी से कोई आशा मत करिए कि मेने उसके लिये वह कार्य किया है। वह भी मेरें लिये करेगा ।

◆ **समस्याएं जीवन का अभिन्न अंग है** - हमें यह जानना चाहिये समस्याएं जीवन का अभिन्न अंग है।वे कभी समाप्त नही होगी , एक समस्या जाएगी तो दूसरी खडी होगी, मुझे याद रखिए कि ससार में ऐसी कोई समस्या नही जो आपके मन की शक्ति से अधिक शक्तिशाली हो, और हल न हो सकती है ।

◆ **प्रत्येक से शिक्षा लें** - संसार में ऐसा कोई व्यक्ति नही जिसे कुछ भी न आता हो और संसार में ऐसा भी कोई नही जिसे सब कुछ आता हों प्रत्येक व्यक्ति चाहे समाज में उसका कोई स्थान या व्यवसाय हो ऐसी कोई चीज कोई चीज जानता है। जो आप नही जानतें अतः हरेक से कुछ न कुछ सीखने का प्रयत्न करना चाहिये

श्री चितंरजन शर्मा
कर्मशाला अनुदेशक

चुटकुले

◆ दो पागल एक गाड़ी में तेजी से चल रहे थे ,तो एक पागल बोलता है— यार ये पेड़ इतनी तेजी से कहाँ जा रहे हैं, तो दूसरा पागल बोला की शाम हो गयी है पेड़ घर को सोने जा रहे हैं।

◆ एक बार कुक्कर व कढ़ाई की लड़ाई होती है। कुक्कर कढ़ाई से छी तुम कितनी काली हो, कढ़ाई— तभी तो तुम मुझे देखकर सीटी मारतें हों।

◆ दो पागल आपस में बात करते हैं। एक पागल —मैं पूरी दुनिया को मिटा दूंगा।
दूसरा पागल—मैं तुझे रबड़ नहीं दूंगा तू दुनिया को कहा से मिटायेंगा।

◆ टिचर क्लास में गया , और पूछा यहां होशियार कोन है। होशियार नाम का लड़का खड़ा उठकर बोला मैं होशियार हूँ।

टिचर— तों यह बताओं कि माँ और गाय केँ दूध में किसका दूध लाभकारी है।

बच्चा —माँ का दूध

टिचर—वो कैसे ?

बच्चा — सर गर्म नहीं करते गैस की बचत , चिनी नहीं मिलाते चीनी की बचत , और पानी नहीं मिलाते पानी की भी बचत इसलिए माँ का दूध लाभकारी है।

टीचर — सबास ।

विनोद सिंह रौथाण
C.S.E प्रथम वर्ष

असफलताओं का महत्त्व

ये असफलताओं ही तो लिखती है, एक पट कहानी ये असफलता ही तो देती है, नयी जिदंगानी।

इन असफलताओं में ही छुपी है, इक छोटी कहानी ये असफलताये ही तों सफलता की सच्ची निशानी,
ये असफलताये ही तो जीवन में आगे बढ़ना है, सिखाती ये असफलताये ही तो आखों में इक नया सपना है सजाती है।

ये असफलताये ही तो हमको है, राहों में रुकाती ये असफलताये ही तों हमको लक्ष्य तक पहुँचाने का विश्वास है दिलाती ,

इन असफलताओं की है अपनी ही इक जवानी ये असफलताये ही लिखती हैं, सफलता की सच्ची कहानी ।

नवनीत कुमार
C.S.E तृतीय वर्ष

"मेरी अभिलाषा"

दर्द दिल से निकल रहा है ,क्यों मेरे जीवन की है।
एक अभिलाषा पूरी करना चाहूँ, मे सबकी आशा,
सबकें सपनों को कर साकार ,लाऊँ उनके जीवन में खुशियों की बहार ।
हर इन्सान को सही राह दिखाऊँ, बुराई से सबको बचाऊँ।
बनना है मुझे एक सच्चा इन्सान,जिसकें दिल में हो सबके लिये सम्मान ।
बुजुगों का करु सम्मान, कभी न हों मुझसे किसी का अपमान ,
गुरुजनों को आदर छोटो को प्यार, माँ बाप को इज्जत यही हो जीवन का सार ।
अत्याचार ,बुराई का करें अन्त ,करकें हर लाचार की सेवा ,
मिटे सबकें मन से ,लालच और दुश्मनी की भावना।
यही हों हम सबकें जीवन की एक अभिलाषा ।

अभिलाषा

C.S.E द्वितीय वर्ष

गुरु

गुरु तो वह पवित्र सरोवर है, जो ज्ञान का भण्डार लिए है।
गुरु तो उस नाविक के समान है, जो नाव को महासागर की लहरो से पार कराये।
गुरु तो उस सूरज की किरण की तरह है जो आँखों में नए सपनों को सच्चे बनाने का विश्वास दिलाए।
गुरु तो अर्जुन के बाण की तरह है, जो लक्ष्य पर दृष्टि को टिकाना सिखायें।
गुरु तो श्रीकृष्ण की गीता के उपदेश की तरह है जो जीवन के सच्चे उद्देश्यों को बतायें।
गुरु तो उन नदियों का सदा बहता पानी है। जो ज्ञान की रोशनी में सभी को नहलायें ।
गुरु तो उस फूल की तरह है जो कांटों में भी राह बनाना और खिलाना सिखायें।
गुरु तो उस तारे की तरह है जो अंधेरे में भी अपने प्राकाश से सभी को राहें दिखायें,
गुरु तो वह परमात्मा है जो सांसार को प्रेम ,परोपकार तथा सच्चाई का वातावरण दिलायें।

नवनीत कुमार

C.S.E तृतीय वर्ष

अजीब है ना

अजीब है ना.... 20 रुपये का नोट बहुत ज्यादा लगता है, जब गरीब को देना हो ,
मगर होटल में टिप देना हो तो बहुत कम लगता है।
तीन मिनट के लिए भगवान को याद करना मुश्किल है
मगर 3 घंटे की फिल्म देखना कितना आसान है।
पूरे दिन मेहनत के बाद जिम जाने से नहीं थकते
मगर माँ बाप के पैर दबाने हो तो हम थक जाते हैं।
वैलेनटाइडे के लिए हम पूरे साल इंतजार करते हैं
मगर मदर डे कब है हमें पता नहीं।
एक रोटी नहीं दें सका कोई उस मासूम बच्चों को ,लेकिन
वो तश्वीर लाखों की बिक गई जिसमें रोटी के लिए वो बच्चा उदास बैठा था ।
अजीब हैं ना ...

ऐ खुदा

ऐ खुदा तूने भी इंसान को खूब आजमाया,

किसी को अमीर माँ किसी को गरीब बनाया।
तू कहता है सब तेरे बच्चे हैं, तों फिर क्यों तूने किसी को महल में
तों किसी को किसी को सड़क के किनारे बसाया है।।

तू कहता है। ये इंसान के कर्म का फल मिलता है।
तो फिर तू क्यों भूल गया बिना तेरे मर्जी के पत्ता भी नहीं हिलता है।
क्यों तुझे दर्द नहीं होता है जब किसी का धर टूटता है,
क्यों तेरा दिल नहीं दुखता है जब एक बच्चा माँ के लिये रोता है।।

बढ़ रहा पाप दुनिया में क्यों उसे तू मिटाता नहीं
कर रहा जो जुर्म फिर क्यों उसे सजा दिलाता नहीं है
अगर तेरी नजर तें सब बराबर तों फिर क्यों तूने
किसी को हिम्मत वाला और किसी को लाचार बनाया है।।

ऐ खुदा तुने इंसान को खूब बनाया।

मो0 नायाब
C.S.E तृतीय वर्ष

क्या आपने माँ को धन्यवाद दिया ?

(एक लेखनी रेखा की जुबानी)

एक माँ है और एक उसका बच्चा प्रिंस जबसे वह पैदा हुआ है तबसे आज तक माँ रोज उसकी मालिस करती है। उसे अच्छा तो लगता है पर यह पता नहीं कि माँ ऐसा क्यों करती है इसके बदले वह रात भर रोता है और माँ को नींद से जगा कर उसकी इस कोशिश के लिए धन्यवाद देता है।

प्रिंस कुछ बड़ा होता है तो माँ उसे चलना सिखाती है। उसे एक एक कदम उठा कर चलता देख पुलकित हो उठती है, दो साल का होने तक वह दौड़ना भी सीख जाता है, अब जब माँ उसे आवाज लगाती है, तो प्रिंस उसके पास आने के बजाये वहाँ से दूर भागता है, माँ से दूर भागकर प्रिंस उसे धन्यवाद देता है। वही बच्चा जब तीन साल का होता है, तो माँ उसे सिखाती है कि खाना कैसे खाया जाता है एक दिन बड़े चाव से उसके लिए खीर पकाती है, छीटी सी कटोरी में परोसकर उसके सामने रखती है पर प्रिंस कटोरी पटक देता है। क्योंकि उसे चाकलेट चाहिए इस तरह वह अपनी माँ को खाना देने के लिए धन्यवाद देता है।

प्रिंस बड़ा हो रहा है माँ उसे 12 रंगों वाली पेसिलों का एक पैकिट लाकर देती है एक सुदरं ड्राइंग बुक भी देती है पर प्रिंस उस ड्राइंग बुक को फाड़कर इधर उधर फेंक देता है और घर की साफ दीवारों पर रंगीन लकीरें बना देता है इस तरह उसने माँ को रंगों की दुनिया से पहचान कराने के लिए धन्यवाद दिया है, जब वह पांच साल का होता है माँ उसके लिए सुन्दर सी ड्रेस लाती है, माँ कल्पना करती है कि जब उसका प्रिंस इस खुबसूरत ड्रेस को पहनकी इटलाएगा तो उसे कितनी खुशी होगी, पर प्रिंस मिट्टी में खेलकर जब घर लौटता है तो ड्रेस बुरी तरह गंदी हो चुकी होती है। इस तरह वह माँ को प्यारी ड्रेस लाने के लिए धन्यवाद देता है।

कुछ दिन बाद प्रिंस स्कूल जाता है माँ उसे रूल छोड़ने जाती है वह स्कूल के बाहर जोर जोर से रोना शुरू करता है और कहता है कि मैं स्कूल नहीं जाऊंगा प्रिंस ने माँ को स्कूल जाने के लिए धन्यावाद दिया अब प्रिंस दस साल का हो गया है वह अब माँ कि बातों पर ध्यान नहीं देता है माँ से ज्यादा वक्त वह अब कॉटून चैनल पर होता है। माँ की तरह अब मुडकर भी नहीं देखता है। प्रिंस अब बड़ा हो गया है, उसकी पंसद ना पंसद माँ की इच्छाओं से बड़ी हो गई है , अब उसे माँ के सहारे की कोई जरूरत नहीं है। वह सारे फैसेले खुद लेने लगा है यह किसी एक प्रिंस की कहानी नहीं है यह आपकी और हमारी सबकी कहानी है। हम सभी इसी तरह बड़े होते हैं और अपनी माँ को इसी तरह धन्यवाद देते हैं। यही है प्रिंस की कहानी अगर आपने अभी तक अपनी माँ को धन्यवाद नहीं कहा तो अभी अपनी माँ को सही मायने में धन्यवाद कहें अपनी माँ से कह दें कि आप उससे कितना प्यार करते हैं।

माँ के समान कोई छाया नहीं मातृ तुल्य कोई पदार्थ नहीं ,
मातृ तुल्य कोई रक्षा बन्धन नहीं, मातृ तुल्य कोई प्रिय पदार्थ नहीं।

रेखा रावत

कनिष्ठ सहायक / डाटा आपरेटर

माँ

माँ ,माँ शब्द बहुत ही छोटा शब्द होता है। पर उस माँ की भूमिका सबसे बड़ी होती है , माँ की ममता दुनिया में सबसे बड़ी होती है माँ भगवान का ही रूप होती है इसलिये भगवान की ही तरह अपनी संतान पर संकट आता देख माँ का मन विचलित हो जाता है सिर्फ इतना ही नहीं माँ परिवार के लिये अनेक त्याग करती है, माँ का प्यार अपने संतान के प्रति इतना होता है कि कभी खत्म ही ना हो, माँ बिना किसी स्वार्थ के अपने बच्चों को इतना स्नेह और प्यार देती है जिसकी कोई सीमा नहीं होती,वह है धात्री जिसका अर्थ है कि उस मा का प्यार कभी खत्म न हो ,इसलिये उसने माँ को बनाया है, मां ने ही इस संसार का निर्माण किया है।अगर माँ ना होती तो हम इस संसार में जन्म ही न ले पाते माँ अपनी संतान को अन्न देती है इसलिये माँ को अन्नपूर्णा के नाम से जाना जाता है,इससे यह पता चलता है कि माँ इस संसार में सबसे बड़ी होती है।

जन्म दिया है सबको माँ ने, पाल पोस कर बड़ा किया,
कितने कष्ट सहन कर उसने सबको पग पर खड़ा किया।
माँ ही सबके मन मंदिर में ममता सदा बहाती है।
बच्चों को वह खिला पिला कर खुद भूखी सो जाती है।
पलकों से ओझल होने पर पल भर में धबराती है,
जैसे गाय बिना बछड़ों के रह रह कर रभाती है,
छोटी सी मुस्कान हमारी उसको जीवन देती है।
अपने सारे सुख – दुःख हम पर न्योछावर कर देती है।

आरती गसाईं

प्रथम सैमेस्टर

पहाड़ी जड़ी बूटियाँ

किमोड़—इसका हिन्दी नाम दारु हल्दी है। यह उत्तरांचल में बहुयतात में पाया जाता है गर्मी के मौसम में इसमें काले फल लगते हैं। जिसे बच्चे बूढ़े सभी अत्यधिक चाव से खाते हैं इसकी जड़ पीले रंग की होती है जो औषधी के काम आती है। इस जड़ को पानी में उबाल कर इसके पानी को छानकर ठण्डा कर आँखों में लगाने से आँखों के समस्त रोग (आँख आना लाली) ठीक हो जाती है। यह पेट के रोग ,मधुमेह ,अल्सर के लिये भी उपयोगी है।

झिरणु— इससे हिन्दी में शतावरी कहा जाता है । इसके सहस्र जड़े होती हैं तथा पौधा कटानुमा होता है। यदि किसी व्यक्ति की आँख में गुहेरी (आँख आना) हो जाये तो इसके शाखा से आँख की पलकों में लगाने से आँखें ठीक हो जाती है। तथा इसकी जड़ों को सुखाकर उसका पाउडर बना दिया जाये और इसका सेवन करने से शरीर हृष्ट पुष्ट होता है।

बसीलु — इसे काला घास भी कहते हैं। इसकी तीखी गन्ध होती है इसे जानवर नहीं खाते हैं। लेकिन यदि शरीर का अंग कटने से खुन बहने लगे ,तो इसकी पत्तियों के रस को निकालकर लगाने से काटा स्थान शीघ्र ठीक हो जाता है।

ब्रमी— यह नमी के स्थान पर पाया जाता है, इसका स्वाद कड़वा होता है। इसकी पत्तियाँ खाने से स्मरण शक्ति में वृद्धि होती है। तथा अनिद्रा को रोकती है, तथा साथ ही सिरदर्द, गले की आवाज में मिठास बढ़ाने के लिये उपयोग किया जा सकता है।

गिलै— इसे गिलोय अमृता के नाम से भी जाना जाता है यह लम्बी बेल के रूप में वृक्षों में लपटी रहती है। इसका स्वाद कड़वा होता है। इसका सेवन प्रतिदिन करना चाहिये यह पेट की व्याधियों , सब प्रकार के बुखार ,लीवर शारीरिक निर्बलता को दूर करने वाला पाचन किया ठीक करना , हीमोग्लोबिन बनता, है तथा चेहरे में चमक आती है।

तुलसी— लगभग सभी घटों में तुलसी गमलों में लगायी जाती है तुलसी दो तरह की होती है 1 कृष्ण तुलसी 2 श्वेत तुलसी ।तुलसी का यह विशेष गुण होता है, कि जहाँ यह लगी होती है उसके आस पास मच्छरों का प्रकोप कम होता है। जुकाम ,खासी में इसके पत्तियों को काढा पिया जाता है बुखार में ,चर्म रोग ,धावों में कान के दर्द में , इसका प्रयोग किया जाता है।

श्री चितंरजन शर्मा
कर्मशाला अनुदेशक

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता (2013-14)



अपनी अपनी पक्ति में पंक्तिबद्ध खड़े छात्र-छात्रायें



खेल प्रतियोगिता का प्रारम्भ करवाते हुये मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि एवं प्रधानाचार्य जी।



स्वागत गान करती हुयी छात्रायें



दौड़ प्रतियोगिता में प्रतिभाग करते हुये छात्र



परिषद् सलामी लेते हुये मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि एवं प्रधानाचार्य

मार्च पास्ट करते हुये समस्त प्रतिभागी।

विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करते हुये प्रतिभागी















राष्ट्रीय सेवा योजना विशेष शिविर (2013-14)



स्वयंसेवियों को सम्बोधित करते हैं

कार्यक्रम अधिकारी



श्रमदान करते स्वयंसेवी



मतदान जागरूकता रैली निकालते हुये
स्वयंसेवी





GOVT POLYTECHNIC RUDRAPRAYAG

YEARLY MAGAZINE

“MANDAKINI”

2013-14

ENGLISH SECTION

PARENTS I LOVE YOU

Since I was baby, you cared so much for me
Sleepless nights, you sung to me lullabies
Till I grew up, you did not change, you are kind
So, for that I love you more than my life
Dear parents, I craved the horizon of the success
Being a part the only gift I guess sometimes
I am down trodden, you are therefore sweet cares
I know not what treasure only the love you deserved
Mother, knowing I could not repay you
I could not find a mother just like you
You are a wonderful indeed
I love you father wishing you go to life a perfect one
You even work hard just for us
Accept our uncertainties, you tenderly love us
Perhaps somebody well be blessed at last
I thought so many times, so much times
How can I express my unbinding love for you
My pen finds the way I could so let this poem
Be my expression...

RASHMI BADONI

C.S.E –V SEM

GIRLS ARE GOD'S GIFT

Girls are God's Gift

She gives a life she is a wife

She is a mother and a friend

An obedient daughter and a sister

Appreciate her, you don't dare

Ask her worries, you don't care

Girls are God's Gift

She cooks, serve and wash

She laughs and always hides her pain

Whether she has lot of strains

Wipe away her tears, you don't dare

Ask her worries, we don't care

Girls are God's Gift

She weeps, murmurs in grief

But tells its cause in brief

She cares and helps other in need

But nobody care her indeed

Protect her you don't dare

Ask her worries, you don't care

Girls are God's Gift

They are great human entity

Always save their chastity

Serve them like an obedient son and servant

Like a dear father and a good husband

A generous brother and sincere friend

Anil Kumar
Guest Lecturer

Look at the stars

Mathematics is an integral part of our everyday life. In this National Mathematical year, let's take a look at why the Jantar and Manter built.

In this year 2013, designated as the National Mathematical year is a tribute to the great mathematician Srinivasa Ramanujam. The mathematic genius died when he was just 33 years old. However, his brilliant work has found him a place along side greats like Isaac Newton, Euclid and Archimedes.

Mathematics is a part and parcel of our daily lives, whether we realise it or not. The story of how the Jantar Manter in New Delhi and Jaipur were built is an example. These observatories compile astronomical tables and also predict time and the movement of the sun, moon and other planets.

Three hundred years ago, a heated argument took place in the courtroom of Mughal Emperor Muhammad Shah. The Emperor had wanted to know if the planets were in a favourable position for him to undertake an important journey. But the dozen or 50 astronomers came up with different calculations and were unable to agree on an "auspicious" date. The Emperor looked at them in exasperation. His kingdom was in danger of being attacked by Marathas from the south, and the Persians from the North. He really needed to set off at once to secure the support of as many neighbouring Hindu kingdoms as he would come to a conclusion.

Quietly watching this commotion was **Maharaja Sawai Jai Singh**. He was the Rajput king of Ajmer, a close ally of the Mughal king, he was well versed in Mathematics, architecture and astronomy. Brewing in his head at the moment was an ambitious plan. The emperor caught the look of intense concentration on Jai Singh's face, and knew that his trouble was about to end. For this man was gifted with extraordinary intellect.

"What do you have in the mind, Sawai Jai Singh" asked the Emperor.

"Simply to build the largest astronomical observatory in the world."

Observe and learn:-

In the periods between the years **1724** and 1734, a truly international collaboration of mathematicians resulted in the rise of the Jantar Manter observatory in Delhi and Jaipur. Sawai Jai Singh consulted Islamic astronomers

and studies their calendars. He read about ancient astronomical observations in Babylon and China.

He spoke to European Jesuit missionaries asking them all about the latest development in Greek astronomy. He was keen student of the work of ancient Indian mathematician, as well as Ptolemy and Euclid. He himself was an architect, trained in traditional Indian method of precise geometric construction. Pooling all this knowledge together, he came up with a number of huge observations that were not only massive in scale but also more accurate than any instrument in use then. Today, they are a standing example of using geometric design generously to make astronomical observation.

One of the most striking structure in Jaipur Janter Manter is the “**Samrat yantra**” This is the world’s largest Sundial. A sundial has two parts- a gnomon and a scale. A gnomon is a long triangular structure. The scale is drawn in a circle at the base of gnomon. As the day progress the gnomon’s shadow moves along the scale. The gnomon in the Jaipur is 73 feet tall (about as much as a seven storey building) There are two arc shaped ramps of either side that reach up to **45** feet.

You can climb up these ramps to watch the shadow of the gnomon fall on the scale below. The smallest division of the scale correspond the two second.

This means that you can read the time of this dial to an accuracy of two seconds. Before this mammoth structure was built, astronomers had only small brass instrument that could not be calibrated to such precision. Sawai Jai Singh simply increased the size of this instrument by more than a hundred time and achieved a degree of accuracy never before possible.

And so the royal astronomers finally reached a consensus on which planet any position was most favourable for their emperor. It is the another matter however that in **1739, Muhammad Shah** was defeated by the Persian emperor Nadir Shah.

Diwakar prasad

Guest Lacturer



Name Napoleon Hill

Born. October 26, 1883Pound, Virginia

Died .November 8, 1970 (aged 87

Nationality American

Field Personal development, self-help, motivation, finance, investment.

Achievement One of the greatest writers on success. His most famous book, Think and Grow Rich (1937), is one of the best-selling books of all time.

Quote 1: A goal is a dream with a deadline.

Quote 2: Action is the real measure of intelligence.

Quote 3: All achievements, all earned riches, have their beginning in an idea.

Quote 4: All the breaks you need in life wait within your imagination, Imagination is the workshop of your mind, capable of turning mind energy into accomplishment and wealth.

Quote 5: Any idea, plan, or purpose may be placed in the mind through repetition of thought.

Quote 6: Big pay and little responsibility are circumstances seldom found together.

Quote 7: Cherish your visions and your dreams as they are the children of your soul, the blueprints of your ultimate achievements

Quote 8: Create a definite plan for carrying out your desire and begin at once, whether you ready or not, to put this plan into action.

Quote 9: Desire is the starting point of all achievement.

Quote 10: Don't wait. The time will never be just right.

Quote 11: Edison failed 10, 000 times before he made the electric light. Do not be discouraged if you fail a few times.

Quote 12: Education comes from within; you get it by struggle and effort and thought.

Quote 13: Everyone enjoys doing the kind of work for which he is best suited.

Quote 14: Fears are nothing more than a state of mind.

Quote 15: Great achievement is usually born of great sacrifice and is never the result of selfishness.

Quote 16: Happiness is found in doing, not merely possessing.

Quote 17: If you cannot do great things, do small things in a great way.

Quote 18: If you do not conquer self, you will be conquered by self.

Quote 19: It is literally true that you can succeed best and quickest by helping others to succeed.

Quote 20: It takes half your life before you discover life is a do-it-yourself project.

Quote 21: Just as our eyes need light in order to see, our minds need ideas in order to conceive.

Quote 22: Man, alone, has the power to transform his thoughts into physical reality; man, alone, can dream and make his dreams come true.

Quote 23: Money without brains is always dangerous.

Quote: More gold has been mined from the thoughts of men than has been taken from the earth.

Quote 25: Most great people have attained their greatest success just one step beyond their greatest failure.

Quote 26: No man can succeed in a line of endeavor which he does not like.

Quote 27: No man is ever whipped until he quits in his own mind.

Quote 28: Ideas are the beginning points of all fortunes.

Quote 29: When your desires are strong enough you will appear to possess superhuman powers to achieve.


Quote 30: You give before you get.

Quote 31: You might well remember that nothing can bring you success but yourself.

Quote 32: Your big opportunity may be right where you are now.

Ankurt kandari

C.S.E III YEAR



Avul Pakir Jainulabdeen Abdul Kalam

Born .15 October 1931 (age 79) in Rameswaram, British India

Nationality Indian

Field Science and Technology

Achievement Popularly known as **Missile Man of India**, Ex **President of India**, **Bharat**

Ratna.**Bharat Ratna**.

Quote 1: Climbing to the top demands strength, whether it is to the top of Mount Everest or to the top of your career.

Quote 2:Do we not realize that self respect comes with self reliance?

Quote 3: Be more dedicated to making solid achievements than in running after swift but synthetic happiness.

Quote 4: English is necessary as at present original works of science are in English. I believe that in two decades times original works of science will start coming out in our languages. Then we can move over like the Japanese.

Quote 5:God, our Creator, has stored within our minds and personalities, great potential strength and ability. Prayer helps us tap and develop these powers.

Quote 6: I was willing to accept what I couldn't change.


Quote 7: Great dreams of great dreamers are always transcended.

Quote 8: If a country is to be corruption free and become a nation of beautiful minds, I strongly feel there are three key societal members who can make a difference. They are the father, the mother and the teacher.

Quote 9:If we are not free, no one will respect us.

Quote 10: In India we only read about death, sickness, terrorism, crime.

Quote 11: Let us sacrifice our today so that our children can have a better tomorrow.



Quote 12: Look at the sky. We are not alone. The whole universe is friendly to us and conspires only to give the best to those who dream and work.

Quote 13: Man needs his difficulties because they are necessary to enjoy success.

Quote 14 : No religion has mandated killing others as a requirement for its sustenance or promotion.

Quote 15: Tell me, why is the media here so negative? Why are we in India so embarrassed to recognise our own strengths, our achievements? We are such a great nation. We have so many amazing success stories but we refuse to acknowledge them. Why?

Quote 16: To succeed in your mission, you must have single-minded devotion to your goal.

Quote 17: You have to dream before your dreams can come true.

Ankur kandari

c.s.e.5 sem



A GREAT QUOTE

Once a flight lost control .Everybody started shouting and crying in fear .There was a little girl with her doll. She kept on playing with her doll fearlessly . After some time the flight fortunately got control and landed safely .one man who was watching that girl asked her curiously that she was not bit bothered and scared when other passengers were helplessly crying .The girl replied that the pilot of that aeroplane was her father and she know that he will not let her in any danger

So the morale of this quote is

“Love is trust and Trust is Life ”

Ankit Negi

First Year

VALUE OF EDUCATION

Education is necessary of country now a days .Value education teaches us our traditional values , moral values . Values education should be made a part of the curriculum in the schools.values and virtues are not hereditary ,They are not acquired . We aquire traditional values from our elders.

Moral values make us human in the true sense of the world . It is essential for every human being .

If values education is schools our children can learn the above value easily .

My school has taken some steps in this direction.

SCIENCE AND TECHNOLOGY IN SERVICE OF MAN

Science and technology has conquered time and space.

The telephone , the wireless ,the aeroplane and television has made our life happier and more comfortable. Electricity has given us heaters , fans , AC and electric train etc . In the state of medicine the discovery of Radium , X- RAYS,Penicilin and BCG increased the span of human life .

Development of science and technology has made our life happier and more comfortable because in the light we can read and write at night . The modern gadgets phone , computer , Internet added more to our happiness and comfort .



SERVICE AND SACRIFICE

Service and sacrifice supplyment and compliment to each other every year our school conduct a special cultural program that highlighted the theme of service and sacrifice. Many people work of the volunteers during the country freedom . It was all voluntary work . They sacrificed their all of the sake of freedom . Many songs and poem were recited how the volunteers served the nation and sacrificed . Our principal told us that the tell of **Baba Amte** whose service and sacrifice is the nation . He was the son of very big landlord . He adopted the lawyers profession but he left all for freedom of nation .

Atul kumar

Cse first year

BIG DATA

When there was nothing there was only darkness .And then it happened, yes the big bang happened and it started the essence of this universe –LIFE.

You must be confused as to why we are talking about big bang here .Essentially we are here to talk about something that took place in the 21st century as the big bang of technology ,”THE BIG DATA” concept which came in as silently as it could and settled in with a bang.

When Google reached its peak, people started talking “GOOGLE days are well over” and that technology will go nowhere now.

But the orkut arrived , made its mark and disappeared in the shadow of Facebook the current social Giant .Today apps like whatsapp and twitter are posing a serious threat to Facebook but still they are far behind.

So what makes these two Giants Facebook & Google stand apart from the crowd in one word answer is Technology.It is not only the use of new technology but also the judicious use of technology i.e. using right technology at the right time.


In the case of Google and Facebook the golden string struck by both of them is “BIG DATA” analytics .They are the pioneer and undoubtedly the “ACES” when it comes down to BIG DATA Analytics .

Now the question arises “What is BIG DATA actually stands for?”

Answer comes **DATA LARGER THAN 50TB** in size is generally termed as “BIGDATA” though there are many definitions for it but the most accepted one is-

DATA > 50TB = BIG DATA

So if we want to know the significance of BIG DATA we must take a deeper and closer look at Facebook and its model.



Every day millions of people log in to Facebook to check their account , to scroll through their friend list , to post their picture , videos etc and here is the place where “BIG DATA” makes its presence felt.

To maintain such a hug data new technology were required .It was not easy to maintain for old ways of maintaining data base where not sufficient to manipulate data moving In and Out of he system with an amazing fast speed of Gigabytes/sec or Terabytes/sec.

So some framework were design for working with BIGDATA. The most popular one being hadoop. This cue little alphabet (hadoop’s logo elephant) has emerged as the most efficient one by far.

Then comes tool like Hive , AMPL etc which are tool for analyzing BIGDATA .It is only because of these tools that Facebook is so successful in presenting their customers with a precise and customize data of their interest.

In all if we say that “BIGDATA” is here stay then this statement is rightfully true and in coming years. It has got to play a big role when “**DATA will be the correny**” for all transactions and all trades .One a man said “**memories are the best things , they do not change**”. **BIGDATA** is just the perfect solution to keep memories intact and hence it is one of the best things that has happen to human race since the beginning of time.

Anjana Nagwal

Lect.c.s.e

STAFF LIST

Mr.Devendra Giri

Principal

TEACHING STAFF

Mr.A.K Lakhera

Lect. Computer.

Mr.Chitranjan Sharma

Inst. WS

Mr.Rishi Bhushan

Lect. c.s.e

Mr.P.C.Bhatt

Lec.chemistry

Miss Anjana

Com.Progr.

Mr.Diwakar Prasad

Lec.Maths

Mr.Anil Kumar

Lec.English

NON-TEACHING STAFF

Mr.Girish Chandra

Administrative ofc.

Mr.Balbeer Singh

Junior clerk

Mrs.Rekha Rawat

Data ent.opr.

Mr.Ram Singh

Lab Att.

Mr.Ganga Dutt

Workshop Att.

Mr.Kishan Dutt

Lab Att.

Mr.Pravendra singh

P.R.D

Mr.Manoj Prasad

P.R.D

संदा किर्मी

वार्षिक पत्रिका-2013-14

अंक-01



राजकीय पॉलीटेक्निक रुद्रप्रयाग
(रतूड़ा)